नई दिल्ली : साहित्य अकादमी द्वारा लगाए गए पुस्तक मेले के दौरान पुस्तक प्रेमी पुस्तकें देखते हुए। (श्याम सुंदर)

साहित्य अकादमी पुस्तक मेले का शानदार उद्घाटन

नई दिल्ली, 6 दिसम्बर (मिलनदीप भाटिया): साहित्य अकादमी द्वारा करवाए गए तीसरे पुस्तक मेले का उद्घाटन अमेरिका में रह चुके भारत के पूर्व राजदूत व लेखक नवतेज सिंह सरना ने किया। साहित्य अकादमी के प्रांगण में चल रहे पुस्तक मेले का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य अकादमी भारतीय साहित्य का दिल है। यहां 24 भारतीय भाषाओं में भारतीय विभिन्नता में एकता को जीवंत होते देखा जा सकता है। पुस्तक मेले के जरिये अकादमी ने ऐसी परम्परा की शुरुआत की है, जो भविष्य में बच्चों व युवाओं को पढ़ने के लिए उत्साहित करेगी। पुस्तकें हमारी सच्ची दोस्त होती हैं और आगे चलकर एक सच्चे दोस्त की तरह हमारा साथ निभाती हैं। उन्होंने डिजीटल माध्यम पर टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्हें इस माध्यम से कोई समस्या नहीं है परंतु उस पर उपलब्ध सामग्री का स्तर चिंता का विषय है। उसे साहित्य नहीं कहा जा सकता। उन्होंने उपस्थित बच्चों को कहा कि वह इंटरनेट फोन आदि के अलावा पुस्तकें पढ़ने की कोशिश करें, जिससे वह तनावमुक्त हो सकेंगे। अतिरिक्त सचिव व वित्तीय सलाहकार, संस्कृति मंत्रालय ने पुस्तक मेले की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसने इतने कम समय में काफी लोकप्रियता हासिल कर ली है और पुस्तकों से युवाओं को जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया है।

*** साहित्य अकादमी भारतीय साहित्य का दिल : नवतेज सरना * क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य साहित्य अकादमी के साथ जिंदा है : रंजना चोपड़ा**

अकादमी द्वारा 24 भारतीय भाषाओं में काम करने की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसकी बदौलत ही हमारी क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य जिंदा है। उन्होंने बच्चों को पुस्तकें पढ़ने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि इसके जरिये बच्चे आधुनिक समाज के लिए तैयार होंगे। केन्द्रीय [illegible] मंत्रालय के संयुक्त सचिव ने पुस्तक मेले की लगातार उन्नति की प्रशंसा करते हुए कहा कि इससे राजधानी में एक नई पुस्तक संस्कृति का जन्म हो रहा है। उन्होंने बच्चों को कहा कि वह सोशल मीडिया पर बहुत सारा समय बर्बाद न करें बल्कि उसकी बजाय पुस्तकें पढ़ें, जो उन्हें नई तरह की संतुष्टि देंगी और तनाव भी कम करेंगी। अपने अध्यक्षीय भाषण में माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य अकादमी के इस पुस्तक मेले की अनोखी बात यह है कि यहां लेखक-पाठक, प्रकाशन, आलोचकों को एक मंच मिलता है जो अन्य पुस्तक मेलों में नहीं होता।

पुस्तक मेले को हम ज्ञान के मंदिर के रूप में देख सकते हैं। साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि आज अकादमी के प्रांगण में पुस्तक मेले के जरिये रोशनी फैल रही है। सोशल मीडिया में सूचनाएं ज्यादा, ज्ञान कम है। साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी मेहमानों का स्वागत पुस्तकें भेंट कर किया। उन्होंने कहा कि पुस्तकें हमारी ज्ञान की सीमा का विस्तार करती हैं और हमारी दुनिया को नए अनुभवों से भरती हैं।